चक्रव्यूह

(नारी–विमर्श के सन्दर्भ में)

डॉ० घनश्याम भारती

Scanned with OKEN Scanner

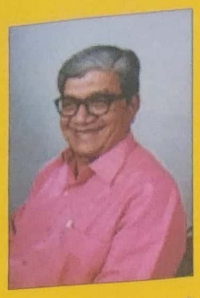

'चक्रव्यूह' डॉ0 घनश्याम भारती के नारी–विमर्श पर केन्द्रित आलेख–संग्रह का शीर्षक है। यह शीर्षक ही डॉ0 भारती के गहन–गंभीर और विचार–प्रधान चिन्तन को रेखांकित करता है। डॉ0 भारती के वैचारिक अनुष्ठान प्रायः गंभीर समाज–चिन्ता को लेकर चलते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में अठारह लेख संग्रहीत हैं। ये भारतीय स्त्री की आत्मा, हृदय और मस्तिष्क का एक सम्यक् अनुसंधान करते हैं। पहला आलेख ही भारतीय स्त्री के अतीत, वर्तमान और भविष्य पर एक भरपूर दृष्टि डालता है। यह अन्वेषण–परक दृष्टि न केवल मर्मबेधी है बल्कि नये रास्ते भी खोलती है। डॉ० भारती का स्त्री विषयक चिन्तन जैसे एक मलय समीर के झोंके का सुखद अनुभव कराता है। भारतीय स्त्री अपने मूल स्वभाव में पुरुष की सच्ची अनुगामिनी है। वह उसकी मित्र और मार्गदर्शक है। उसकी उपस्थिति है तो जीवन है, रस है, आनंद है और जय है। डॉ० भारती से मैं विगत अनेक दशकों से परिचित हूँ। वे जितने सहज और सरल व्यक्तित्व के धनी हैं उतने ही गंभीर अध्यापक हैं। उनके द्वारा रचित 'चक्रव्यूह' निबंध–संग्रह नारी–विमर्श के मुद्दों तथा भारतीय समाज में नारी की स्थिति और उसकी संघर्ष–यात्रा को बखूबी चित्रित करता है। स्त्री–विमर्श पर केन्द्रित अपने इस संग्रह में डॉ० घनश्याम भारती ने भारतीय स्त्रियों की जिस उत्कट जिजीविषा को रेखांकित किया है, वह प्रशंसनीय तथा सराहनीय है।

डॉ0 सुरेश आचार्य
प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी–विभाग
डॉ0 हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश

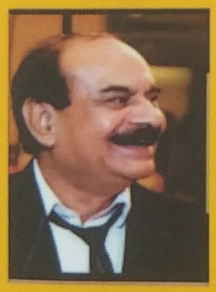

देश और दुनिया की आधी आबादी यदि नारी की है तो इस सत्य को भी नकारा नहीं जा सकता है कि शेष आधी आबादी की रचयिता भी वही है अर्थात् नारी शक्ति के बिना इस संसार के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। वह हरेक युग में पुरुष की परामर्शदात्री माँ, पत्नी, बहन के रूप में रही है। नारी अपने हर स्वरूप में पुरुष की संरक्षक है, मार्गदर्शिका है और जन्मदात्री भी है फिर भी पुरुष दंभ से भरा है कि उसके बिना नारी अस्तित्वहीन है, जबकि वस्तुस्थिति में हरेक युग में और हर स्वरूप में वही श्रेष्ठ है। अतः प्राचीनकाल से वर्तमान तक नारी के विविध स्वरूपों–संदर्भों में उसकी उपस्थिति को प्रखर शिक्षाविद्, समीक्षक डॉ० घनश्याम भारती ने अपनी कृति 'चक्रव्यूह' में रेखांकित करने का भागीरथ प्रयास किया है। डॉ० भारती की नारी–विमर्श पर आधारित यह पुस्तक नारी के सम्मान तथा उसके सर्वांगीण विकास में सहायक हो, यही मंगलकामना है।

डॉ0 श्याम मनोहर पचौरी
प्रोफेसर, इतिहासविद् एवं प्राचार्य
शास० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गढ़ाकोटा, सागर
(मध्यप्रदेश)

Scanned with OKEN Scanner

चक्रव्यूह

(नारी–विमर्श के सन्दर्भ में)

Scanned with OKEN Scanner

चक्रव्यूह

(नारी–विमर्श के सन्दर्भ में)

डॉ० घनश्याम भारती

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेलः jtspublications@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।

चक्रव्यूह (नारी–विमर्श के सन्दर्भ में)

डॉ० घनश्याम भारती

© डॉ० घनश्याम भारती

प्रथम संस्करण : २०२०

ISBN 978-93-90143-00-9

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-508, गली नं०17, विजय पार्क, दिल्ली-110053

दूरभाष : 08527 460252, 09990236819

E-Mail : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस

ए-9, नवीन इनक्लेव गाज़ियाबाद,

उत्तरप्रदेश, पिन-201102

मूल्य : ५६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

CHAKRAVYUH (NARI-VIMARSH KE SANDARBH MEIN)
by Dr. Ghanshyam Bharti

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

भूमिका : आचार्य पं० पृथ्वीनाथ पाण्डेय ७

डॉ० सुरेश आचार्य १४

प्राक्कथन - डॉ० श्याम मनोहर पचौरी १७

पुरोवाक् - डॉ० घनश्याम भारती १९

१. भारतीय नारी : कल, आज और कल २४

२. कन्या भ्रूण हत्या : एक सामाजिक अभिशाप ३३

३. असुरक्षा एवं बढ़ते अपराधों के चक्रव्यूह में घिरी नारी ३७

४. आधुनिक भारतीय समाज में नारी की स्थिति ४३

५. श्रीरामचरितमानस की नारी-शक्ति का लौकिक प्रभाव ४८

६. भारतीय संस्कृति का महिमा-मण्डन करते रामकथा के नारी-पात्र ५६

७. मीराँ के काव्य में सांगीतिक-तत्त्व की उपयोगिता और महत्व ६३

८. महाकवि बिहारी का नायिका-भेद ६८

९. महिला-विकास में शासकीय योजनाओं की भूमिका ७५

१०. महादेवी वर्मा की संघर्ष-यात्रा ८०

११. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में नारी-जीवन ८८

१२. महादेवी वर्मा के गद्य में नारी-चिन्तन ९५

१३. साठोत्तरी महिला कथाकारों के उपन्यासों में नारी-दशा और दिशा १०८

१४. रांगेय राघव की कहानियों में नारी-समाज की सजग उपस्थिति १२०

१५. रांगेय राघव के उपन्यासों में दलित-स्त्रियों की सामाजिक चेतना १२९

१६. मेहरून्निसा के उपन्यासों में नारी-आकर्षण और विकर्षण १३७

१७. ममता कालिया की कहानियों में नारी जीवन-मूल्य १४३

१८. आदर्श समाज सेविका मीना पिंपलापुरे १५०

Scanned with OKEN Scanner

डॉ० घनश्याम भारती : एक परिचय

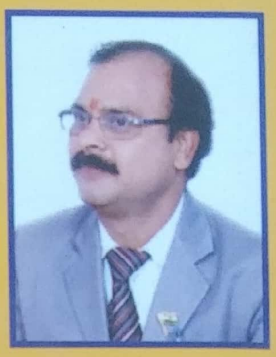

हिन्दी–समीक्षा, समालोचना एवं सम्पादन–कला में दक्ष सागर, मध्यप्रदेश के प्रखर समीक्षक डॉ० घनश्याम भारती देश के ख्यातिलब्ध साहित्यकारों में एक निष्णात हस्ताक्षर हैं। देश के चर्चित राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल्स में आपके लगभग 60 शोध–पत्र, साहित्यिक पत्रिकाओं में कई लेख, समीक्षाएँ, साक्षात्कार तथा पुस्तकों में अध्याय, भूमिकाएँ प्रकाशित हैं। डबल ब्लाइंड पीयर रिव्यूड, रिफर्ड इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल्स में भी आपके शोधालेख, समीक्षाएँ आदि प्रकाशित हैं। डॉ० घनश्याम भारती को कई राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय सम्मानों से उनकी सर्जनात्मकता–हेतु विभूषित किया जा चुका है। इनके 'रांगेय राघव के कथा–साहित्य में लोकजीवन' ग्रंथ पर 'कादम्बरी सम्मान', 'शोध और समीक्षा के विविध आयाम' निबंध–संग्रह पर 'साहित्य विभूषण सम्मान', 'हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियाँ' पाठ्य पुस्तक पर 'प्रज्ञाभारती सम्मान' के साथ 'सारस्वत सम्मान', 'शब्द–शिल्पी सम्मान', 'ज्ञान सागर अलंकार', 'अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा सम्मान', 'भारती शिखर सम्मान', 'प्रबुद्ध खालसा सम्मान', 'साहित्य मार्तण्ड शिखर सम्मान', 'महामहोपाध्याय सम्मान', 'साहित्य भारती शिखर सम्मान','साहित्य शिरोमणि सम्मान' तथा अमेरिका की विजिटिंग स्कालर डॉ. नीलम जैन द्वारा 'अहिंसा सम्मान' से विभूषित किया जा चुका है। इलाहाबाद तथा रायबरेली (उ.प्र.) में 2018 में डॉ० भारती को 'मुंशी प्रेमचन्द सम्मान' तथा 'भाषा–गौरव सम्मान' से भी नवाजा गया। इनके द्वारा सम्पादित तथा मौलिक अन्य कृतियों में 'सत्य से साक्षात्कार के कवि निर्मलचंद निर्मल', 'व्यक्तित्व–भाषा–मीडिया : एक अनुशीलन', 'समय–समाज–साहित्य : एक परिशीलन', 'वैश्विक जीवन–मूल्य और रामकथा', 'लोकजीवन में रामकथा', 'रामकथा का वैश्विक परिदृश्य' 'अतुल्य भारत संस्कृति और राष्ट्र', 'मानक साहित्यिक निबन्ध', 'मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम', 'महात्मा गांधी का समग्र जीवन–दर्शन' (प्रकाशनाधीन) तथा 'चक्रव्यूह' (नारी विमर्श पर केन्द्रित निबन्ध–संग्रह) आदि पुस्तकें शोध, समीक्षा, निबंध लेखन तथा संपादन के क्षेत्र में विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों, साहित्य प्रेमियों तथा समाज को एक नई दिशा, ज्ञान, नैतिकता तथा सदाचार का संदेश देने में सहायक सिद्ध हुई हैं। डॉ० घनश्याम भारती द्वारा 23–24 अप्रैल 2018 को वैश्विक जीवन मूल्य और रामकथा शीर्षक पर केन्द्रित वैश्विक स्तर पर अंतरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें देश–विदेश के रामकथा प्रेमी, शोधार्थी तथा साहित्य–मनीषी एकत्र हुए। आपके द्वारा 'सृष्टि' पत्रिका के 12 अंकों का संपादन तथा त्रैमासिक समाचार–पत्र का संपादन किया जा चुका है। डॉ० भारती के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर आधारित पुस्तक 'नयी पीढ़ी के सारस्वत हस्ताक्षर डॉ० घनश्याम भारती' देश के प्रख्यात भाषाविद्–समीक्षक डॉ० पृथ्वीनाथ पाण्डेय द्वारा सम्पादित की जा चुकी है। वर्तमान में आप शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गढ़ाकोटा, सागर मध्यप्रदेश में हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।

स्थायी सम्पर्क : विद्यापुरम् (एक्सटेंशन), बटालियन रोड, मकरोनिया, सागर (म.प्र.) 470004
ईमेल : dr.ghanshyambharti@gmail.com
चलित दूरभाष : 9893747806, 7771053687

₹ 595/-

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 011-22911223
ईमेल: jtspublications@gmail.com
ब्रांच ऑफिस: ए-9, नवीन इनक्लेव गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश, पिन-201102

ISBN 978-93-90143-00-9
9 789390 143009

Scanned with OKEN Scanner